जलवायु परिवर्तन और शिक्षा: एक गहराता संकट

जलवायु परिवर्तन अब केवल पर्यावरण का मुद्दा नहीं रहा, बल्कि यह सामाजिक, आर्थिक और शैक्षणिक क्षेत्रों को भी प्रभावित कर रहा है। खासकर बच्चों की शिक्षा पर इसका असर स्पष्ट रूप से दिख रहा है, विशेष रूप से शहरी गरीब क्षेत्रों में, जहाँ संसाधनों की पहले से ही कमी है। ICLEI साउथ एशिया द्वारा उदयपुर, अहमदाबाद और सूरत जैसे शहरों में हालिया किये अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ है कि अत्यधिक गर्मी, शहरी बाढ़ और जल-जमाव ने बच्चों की स्कूल तक पहुंच, ध्यान केंद्रित करने की क्षमता, खेलकूद, मानसिक स्वास्थ्य और शिक्षकों के प्रदर्शन को नकारात्मक रूप से बहुत गहराई तक प्रभावित किया है।

बच्चों के साथ हुई बातचीत के अनुसार उन्होंने बताया कि तेज़ गर्मी में उन्हें घर से स्कूल और वापस आने में काफी परेशानी होती है। सड़कें तप रही होती है, मार्ग में उचित छाया के कोई प्रबंध नहीं होते और तो और लोग जहाँ तहां अपने वाहन पार्क कर देते हैं, जिस से चलने में भी काफी परेशानी होती है। उदयपुर और सूरत में फुटपाथ की कमी भी बच्चों को काफी खलती है। इसके अलावा लोग भवन निर्माण का कचरा और सामग्री भी सड़कों पर डाल देते हैं, जिस से चलने में काफी परेशानी होती है।

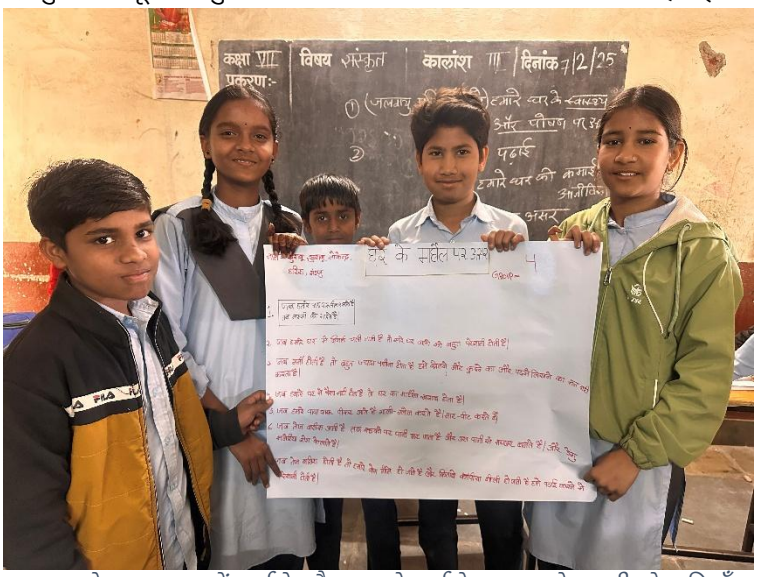

उदयपुर के एक स्कूल में चर्चा के दौरान बच्चे चार्ट के माध्यम से अपनी परेशानियाँ बताते हुए

सूरत के उधना क्षेत्र स्थित राजकीय मराठी भाषाई मॉडल स्कूल के छात्र वीरेंद्र के अनुसार तेज़ गर्मियों के दौरान साइकिल से स्कूल आने के दौरान उसका पूरा शर्ट पसीने से भीग जाता है। उसे अपनी कक्षा में उसी स्थिति में काफी समय तक रहना होता है; ऐसे में उसका पढ़ाई में मन नहीं लगता।

उदयपुर की रीना कुमारी कृष्णपुरा में रहती है। उसका स्कूल आयड नदी के दूसरे छोर की कोलोनी भूपालपुरा में है। नदी पर एक रपट बनी हुई है जिससे आम दिनों में उसे स्कूल पहुँचने में १० मिनट लगते हैं। रीना और उसकी सहेलियों ने बताया कि जब भी अतिवृष्टि होती है; नदी का पुल (रपट) डूब जाता है। ऐसे में उन्हें लम्बा रास्ता तय करके भूपालपुरा मुख्य सड़क होते हुए आना पड़ता है। यह रास्ता अपेक्षाकृत लम्बा और ट्राफिक वाला होता है। लड़कियों ने ये भी बताया कि इस दौरान वे रास्ते में कभी-कभी छेड़खानी का भी शिकार होती है। लड़के उन्हें फब्तियां कसते हैं और गाने सुनाते हैं। कुछ लड़के उनका पीछा तक करते है। इस से वे असहज हो जाती है। लड़कियों ने बताया कि- चूँकि ये रास्ता उनका नियमित रास्ता नहीं होता- ऐसे में वे किसी को पहचानती भी नहीं और किसी को बता नहीं पाती। उन्हें डर है कि अगर घर पर इस बारे में बात की तो उनके अभिभावक उनकी पढ़ाई छुड़वा देंगे। उनके समाज में छेड़खानी का शिकार होने पर गलती लड़की की ही मानी जाती है। अहमदाबाद के नरोडा क्षेत्र में भी किशोरियों की यही कहानी है।

नीतू (१२ वर्ष) वासना क्षेत्र (अहमदाबाद) से सरकारी स्कूल जाती है। बारिश के मौसम में उसके मोहल्ले की सड़कें जलमग्न हो जाती हैं। पिछले साल लगातार तीन दिन स्कूल नहीं जा सकी। नीतू बताती है कि उसे डर लगता है कि वह पढ़ाई में सबसे पीछे

रह जाएगी। मणिनगर के सुमित (१४ वर्ष) को चक्कर और सिरदर्द की शिकायत रहती है, खासकर गर्मियों में। उसके स्कूल की छत टीन की है, जिससे कक्षा में तापमान ४५ डिग्री तक पहुंच जाता है। शिक्षक भी जल्दी छुट्टी दे देते हैं। फहीम (सूरत) के इलाके में पानी भरने से कई दिनों तक स्कूल बंद रहा। घर पर भी तंग गलियों और शोर के कारण वह ठीक से पढ़ाई नहीं कर सका। उसका टेस्ट छूट गया और अब वह स्कूल से कटाव महसूस करता है। परशुराम कॉलोनी, मादड़ी, लोहार कोलोनी, सज्जन नगर (सभी उदयपुर) के आंगनवाड़ी केन्द्रों में गर्मियों में उपस्थिति न के बराबर होती है। तापघात के डर से अभिभावक अपने छोटे बच्चों को केंद्र नहीं भेजते।

तीनों शहरों में बच्चों की स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याएं भी आम है। गर्मी के कारण स्कूल और घर में डिहाइड्रेशन, चक्कर आना, हीट स्ट्रोक जैसे लक्षण सामने आते हैं। बाढ़ के समय दूषित पानी और मच्छरों से बच्चों को दस्त, त्वचा रोग और वायरल बीमारियाँ हो रही हैं। बच्चों ने बताया कि ऊँचे तापमान और घर में पर्याप्त वेंटिलेशन और अन्य सुविधाएं नहीं होने के कारण पढ़ाई पर ध्यान नहीं लग पाता। घरों में कूलर या पंखे नहीं होते, जिससे बच्चों को पसीने और घुटन की स्थिति में पढ़ाई करनी पड़ती है। झुग्गी बस्तियों में शोर, पानी भराव और घरेलू जिम्मेदारियों के चलते बच्चों को पढ़ाई के लिए अनुकूल वातावरण नहीं मिल पाता।

उदयपुर के कई सरकारी स्कूलों और आंगनवाडी केन्द्रों के हाल भी बहुत अच्छे नहीं है। स्कूलों में भी पर्याप्त वेंटिलेशन और साधनों की कमी है। उदयपुर शहर की ७५% से अधिक आँगनवाड़ियों में तो बिजली कनेक्शन तक नहीं है। ऐसे में बच्चों को पूरे समय केंद्र में बिठाये रखना बहुत मुश्किल हो जाता है। अगर बच्चे केंद्र या स्कूल नहीं आते हैं तो उनका दोपहर का मिड-डे-मील (गर्म पोषाहार) छूट जाता है; ऐसे में घरों पर आर्थिक बोझ तो बढ़ता ही है; बच्चे भी कुपोषित और रक्ताल्पता (एनीमिया) का शिकार हो जाते हैं।

जहाँ उदयपुर में बच्चे तेज़ गर्मी के दौरान बाहरी खेल गतिविधियों से वंचित होते हैं, वहीँ सूरत और अहमदाबाद में गर्मी के साथ-साथ अतिवृष्टि और जल-भराव भी उनका खेलकूद रोक देते हैं। लिम्बायत, उधना, कातरगाम, रंदार (सभी सूरत) के बच्चों ने बताया कि उनके खेल मैदान कई कई दिन तक पानी में डूबे रहते हैं; ऐसे में वे बाहर खेल नहीं पाते। तेज़ गर्मियों में तो बच्चे वैसे ही दोपहर के समय बाहर खेलने नहीं जा पाते। सूरत में तापी नदी के बहाव क्षेत्र और खाड़ी (क्रीक) क्षेत्रों के नजदीक कई स्कूल हैं।

जलवायु परिवर्तन से शिक्षा पर पड़ रहे तात्कालिक और दीर्घ असर को इस तालिका से समझने की कोशिश करते हैं:

परिस्थिति	**तात्कालिक और दीर्घकालीन असर**
बाढ़ या तेज़ गर्मी के कारण स्कूल तक पहुंचना कठिन	स्कूल में उपस्थिति कम, कक्षाएं छूटती हैं
गर्मी के कारण थकान, सिरदर्द, पानी की कमी	ध्यान भटकता है, सीखने की गति धीमी होती है
घरों में शांति और स्पेस की कमी	बच्चों की पढ़ाई में व्यवधान, तनाव में वृद्धि
खेल और अन्य गतिविधियाँ बंद	बच्चों का मानसिक और सामाजिक विकास प्रभावित
शिक्षकों का अनुपस्थित रहना या कम ध्यान देना	पठन-पाठन की गुणवत्ता में गिरावट, बच्चों की रुचि कम होना
बच्चों की सीखने की गति धीमी हो जाती है	कक्षा में पिछड़ जाना, ड्रॉपआउट की संभावना बढ़ना
स्वास्थ्य खराब होने के कारण स्कूल से दूरी बनी रहती है	कमजोर शैक्षणिक प्रदर्शन, आत्मविश्वास की कमी
खेल और समूह गतिविधियों की कमी	सामाजिक कौशल का विकास नहीं हो पाना
शिक्षकों की अनियमितता	शैक्षणिक असमानता बढ़ना
माता-पिता की चिंता और असहायता	बच्चों में मानसिक तनाव, घर में शिक्षा को प्राथमिकता न मिलना
ड्रॉपआउट होना	जल्दी शादी या कम आयु में काम के लिए पलायन

जलवायु परिवर्तन के कारण चरम गर्मी की चपेट में आये बच्चों की शिक्षा पर पड़ रहे असर को यूनेस्को की ग्लोबल एजुकेशन मोनिटरिंग (जीईएम) और कनाडा की यूनिवर्सिटी ऑफ़ सस्केचेवान ने अपने नवीनतम अध्ययन में भी बताया। उनके अनुसार अत्यधिक गर्मी में पल रहे बच्चों की स्कूली शिक्षा में औसतन डेढ़ साल की गिरावट दर्ज की गयी। रिपोर्ट के अनुसार, पिछले २० सालों में हर साल ७५% गंभीर मौसमीय घटनाओं के दौरान स्कूल बंद हुए, जिस से ५ करोड़ से अधिक लोग प्रभावित हुए। यह भी पाया गया कि गर्भावस्था या जीवन के शुरूआती वर्षों में अगर बच्चा औसत से २ गुना तापमान में पलता है तो वह स्कूली शिक्षा में डेढ़ साल तक पिछड़ जाते हैं।

सूरत के उधना स्थित स्कूल में किशोरी बालिकाएं अपनी बात रखते हुए

क्या हो संभावित समाधान ?

<u>स्थानीय निकायों के स्तर पर:</u>

- **जल भराव और तेज़ तापमान प्रबंधन के लिए ढांचागत सुधार** (स्कूलों तक पहुँचने वाले रास्तों को ऊँचा व सुरक्षित बनाना; मार्ग में छायादार पेड़, शेड और तापमान कम करने के उपायों का प्रबंधन; पानी की निकासी के लिए बेहतर ड्रेनेज सिस्टम बनाना; बारिश के मौसम में स्कूल तक सुरक्षित पहुंच के लिए वैकल्पिक मार्गों की पहचान और सुधार आदि)
- **स्कूल जाने के लिए सुरक्षित ट्रांसपोर्ट सुविधा** (बाढ़ व गर्मी के दौरान सुरक्षित स्कूल बस/ई-रिक्शा की सुविधा देना; हाई रिस्क एरिया में बच्चों के लिए फ्री या सब्सिडाइज्ड परिवहन की सुविधा आदि)
- **ग्रीन स्कूल ज़ोन का निर्माण** (हर वार्ड/जोन में कम से कम एक ग्रीन स्कूल कॉरिडोर विकसित करना; स्थानीय प्रशासन के साथ स्कूल इमरजेंसी रेस्पॉन्स टीम गठित करना आदि)
- **स्कूलों के लिए डिजास्टर मैनेजमेंट प्लान** (स्कूलों और आंगनवाड़ी केन्द्रों के लिए तेज़ गर्मी और बाढ़ के दौरान आवश्यक उपायों के लिए मानक संचालन प्रक्रिया (एस।ओ।पी।) बनाना; स्थानीय प्रशसन के साथ स्कूल इमरजेंसी रेस्पॉन्स टीम गठित करना; समय समय पर सुरक्षा अभ्यास (मोकड्रिल))
- **जान जागरूकता का निर्माण** (समुदाय को समय पर सूचित करने के लिए सोश्यल मीडिया, एसएमएस, अख़बारों, समाचार चैनलों, मोबाइल एप आदि के माध्यम से सूचना और जन-जागरूकता संदेशों का प्रसारण; बच्चों और अभिभावकों के लिए वार्ड स्तर पर जलवायु लचीलापन शिविर आदि)

<u>स्कूल प्रशासन स्तर पर:</u>

- **जलवायु फ्रेंडली स्कूल समय सारणी और अवकाश व्यवस्था** (गर्मियों में स्कूल का समय सुबह जल्दी करना; हीटवेव या बाढ़ अलर्ट पर स्कूल बंद रखने या ऑनलाइन शिक्षण विकल्प देना; अस्थायी लर्निंग सेंटर्स का निर्माण उन इलाकों में जहां स्कूल प्रभावित होते हैं आदि)

- **कक्षा कक्षों में थर्मल सुरक्षा व वेंटिलेशन सुधार** (छतों पर कूल कोटिंग, कक्षा में क्रॉस वेंटिलेशन व पंखे लगाना; वृक्षारोपण; प्राकृतिक छाँव का प्रबंधन आदि)
- **आउटडोर एक्टिविटी का समय बदलना या इनडोर करना** (आउटडोर खेलों का समय सुबह करना; तेज़ गर्मी के दौरान इनडोर खेल, योग, संगीत की क्लास आदि)
- **टीचर्स की संवेदनशीलता और प्रशिक्षण** (जलवायु संकट के लक्षण पहचानने और प्राथमिक मदद के लिए प्रशिक्षित करना; मानसिक स्वास्थ्य और व्यवहारिक समस्याओं के लिए रेफरल सिस्टम बनाना; विषय विशेषज्ञों- अस्पतालों के साथ समन्वय; शिक्षकों और बच्चों के लिए मेंटल हेल्थ सपोर्ट आदि)
- **स्टूडेंट्स हेल्थ ट्रैकिंग** (बच्चों की उपस्थिति, थकान, चक्कर, कमजोरी आदि का ट्रैक रखना; प्रत्येक स्कूल में प्राथमिक मेडिकल किट और पानी उपलब्ध कराना आदि)

<u>आंगनवाड़ी/ समेकित बाल विकास के स्तर पर:</u>

- **छोटे बच्चों के लिए मौसम अनुसार टाइमिंग और शेड्यूल** (सुबह जल्दी आंगनवाड़ी खोलना या २ शिफ्ट में संचालन; गर्मी में इनडोर एक्टिविटीज और हल्की गतिविधियाँ; कच्ची बस्तियों और बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में सामुदायिक सह-शिक्षण केंद्र बनाना आदि)
- **सामुदायिक निगरानी और सहयोग तंत्र बनाना (**स्थानीय माताओं के समूह बनाकर बच्चों की उपस्थिति और स्वास्थ्य पर नजर; आंगनवाड़ी कर्यकर्ता और आशा सहयोगिनी द्वारा घर-घर जाकर बच्चों को बुलाना (विशेषकर बाढ़ के बाद) आदि)
- **हीट/फ्लड अलर्ट पर डिस्ट्रीब्यूशन पैकेज** (घर में पढ़ाई का किट (वर्कशीट, कहानी की किताबें) देना; गर्मी में ओआरएस, ठंडा पानी, छांव की व्यवस्था आदि)
- **पोषण सेवाओं में लचीलापन** (पोषण आहार में गर्मी अनुसार खाद्य बदलाव (हल्का, पौष्टिक और हाइड्रेटिंग); सूखे खाद्य वितरण की तैयारी आदि)
- **अभिभावक सत्र और जलवायु साक्षरता** (बच्चों के स्वास्थ्य व शिक्षा पर जलवायु प्रभाव के प्रति जागरूकता सत्र; बच्चियों की शिक्षा को लेकर अभिभावकों की सोच बदलने के लिए चर्चा; माता-पिता की भागीदारी बढ़ाने के लिए सामूहिक बैठकों और जानकारी सत्रों का आयोजन आदि)

चलते, चलते

जलवायु परिवर्तन अब शिक्षा को केवल बाधित नहीं कर रहा, बल्कि उसके मूलभूत ढांचे को चुनौती दे रहा है। बच्चों का स्कूल जाना, पढ़ाई करना और मानसिक-सामाजिक विकास करना इन पर्यावरणीय बदलावों के कारण मुश्किल हो गया है। इसलिए अब समय है कि स्थानीय प्रशासन, स्कूल व्यवस्थाएं और समुदाय मिलकर ऐसे समाधान विकसित करें, जो बच्चों के शिक्षा अधिकार को सुरक्षित रख सकें।

आलेख,
ओम (प्रारम्भिक बाल्यावस्था और सामुदायिक शिक्षा एवं सहभागिता विशेषज्ञ);
ICLEI साउथ एशिया, उदयपुर